उठो, जागो, बढ़ो और तबतक मत रूको जबतक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।
– अज्ञात

पेज थ्री
www.page3news.in

चारों क्वाड देश कवायद में शामिल

सिडनी स्थित थिंक टैंक लोवी इंस्टिट्यूट द्वारा हर साल जारी की जाने वाली इस रिपोर्ट में आर्थिक संबंध, रक्षा खर्च, आंतरिक स्थिरता, सूचनाओं का प्रवाह और भविष्य के अनुमानित संसाधन जैसे 128 कारकों के आधार पर एशियाई क्षेत्र में 26 देशों के प्रभाव का आकलन किया जाता है।

नवीन शाह।।

आखिर यह तय हो गया कि अगले महीने होने वाले मलाबार नौसैनिक युद्धाभ्यास में भारत, जापान और अमेरिका के साथ ऑस्ट्रेलिया भी शामिल होगा। यह पहला मौका है जब चारों क्वाड देश इस कवायद में शामिल हो रहे हैं। इसकी अहमियत इस मायने में है कि साउथ चाइना सी ही नहीं भारत–चीन सीमा समेत समूचे एशिया–प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती चीनी आक्रामकता से ये चारों देश चिंतित हैं और इस पर अंकुश लगाने के लिए आपसी सहयोग बढ़ाने की जरूरत महसूस कर रहे हैं। मौजूदा माहौल में इसे चीन की हरकतों के खिलाफ बनते अंतरराष्ट्रीय जनमत का संकेत भी माना जा सकता है। मगर क्वाड संदर्भों से थोड़ा परे जाते हुए एशिया में विभिन्न देशों के बदलते शक्ति समीकरणों की बात करें तो इसका जायजा लेने के लिए सोमवार को जारी एशिया पावर इंडेक्स की रिपोर्ट एक अच्छा जरिया हो सकती है। सिडनी स्थित थिंक टैंक लोवी इंस्टिट्यूट द्वारा हर साल जारी की जाने वाली इस रिपोर्ट में आर्थिक संबंध, रक्षा खर्च, आंतरिक स्थिरता, सूचनाओं का प्रवाह और भविष्य के अनुमानित संसाध ान जैसे 128 कारकों के आधार पर एशियाई क्षेत्र में 26 देशों के प्रभाव का आकलन किया जाता है। ताजा रिपोर्ट की खासियत यह है कि इसमें कोरोना महामारी से आए बदलावों की विशेष तौर पर पड़ताल की गई है।

रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना वायरस से सही तरीके से न निपट पाने के कारण दुनिया पर अमेरिकी प्रभाव खासा कम हुआ है। महामारी के बेकाबू हो जाने से अमेरिका में संक्रमितों और मृतकों की संख्या बहुत बढ़ गई, दूसरी तरफ उसकी अर्थव्यवस्था को ऐसा धक्का लगा कि उससे उबर कर कोरोना पूर्व की स्थिति में पहुंचना 2024 तक ही संभव हो पाएगा। यही नहीं, डॉनल्ड ट्रंप की अगुआई में अमेरिका ने कई बहुपक्षीय समझौतों से एकतरफा अंदाज में निकल आने की जो प्रवृत्ति दिखाई, उसका भी काफी बुरा असर उसकी साख पर पड़ा। इन सबका मिला–जुला नतीजा यह रहा कि एशिया पावर इंडेक्स में उसे पिछले साल के मुकाबले तीन पॉइंट कम मिले, जो उसकी साख में लगे बट्टे का स्पष्ट संकेत है।

इसके बावजूद एशिया में असर की दृष्टि से अमेरिका की नंबर वन और चीन की नंबर दो पोजिशन पहले की ही तरह बनी हुई है। 26 देशों के इस इंडेक्स में ऑस्ट्रेलिया ने साउथ कोरिया को पीछे छोड़कर एक स्थान की बढ़त हासिल की। उसे पॉइंट मिले सांस्कृतिक और कूटनीतिक प्रभाव के मोर्चे पर, वह भी कोरोना महामारी से बेहतर ढंग से निपटने की एवज में। भारत इस क्षेत्र में अपने प्रभाव की दृष्टि से अमेरिका, चीन और जापान के बाद चौथे नंबर पर है, हालांकि उसके पॉइंट घटे हैं। बहरहाल, इस इंडेक्स का मकसद ही यह बताना है कि शक्ति संतुलन में किसी जगह को स्थायी न माना जाए। कोरोना महामारी ने हमें चाहे जितना भी नुकसान पहुंचाया हो, पर भीतरी– बाहरी चुनौतियों का कुशलता से सामना करते हुए हम न केवल अपनी स्थिति मजबूत कर सकते हैं बल्कि दुनिया में अपना असर भी बढ़ा सकते हैं। क्वाड देशों के सम्मिलित युद्धाभ्यास को इस यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा सकता है।

प्रतिनिधित्व

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।
दशदिशःरू ये दसो दिशाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक दिशा के स्वामी को दिक्पाल कहते हैं। ये हैं – पूर्व (इंद्र), आग्नेय (अग्नि), दक्षिण (यम), नैऋत्य (सूर्य), पश्चिम (वरुण), वायव्य (वायु), उत्तर (कुबेर), ईशान (सोम), उर्ध्व (ब्रह्मा) एवं अधो (अनंत)।
रुद्राःरू ये ११ रुद्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये सभी भगवान शंकर के रूप माने जाते हैं और ३३ कोटि देवताओं में स्थान पाते हैं। ये हैं – शम्भू, पिनाकी, गिरीश, स्थाणु, भर्ग, भव, सदाशिव, शिव, हर, शर्व एवं कपाली।
आदित्याः ये १२ आदित्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्ही आदित्यों को हम आम भाषा में देवता कहते हैं। ये महर्षि कश्यप एवं दक्षपुत्री अदिति के पुत्र हैं हुए ३३ कोटि देवताओं में स्थान रखते हैं। ये हैं – इंद्र, धाता, पर्जन्य, त्वष्टा, पूषा, अर्यमा, भग, विवस्वान (सूर्य), अंशुमान, मित्र, वरुण एवं विष्णु (वामन)।

संपादकीय

दुश्मन का दुश्मन दोस्त

पुरानी कहावत है कि दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। बंगाल की पॉलिटिक्स में कुछ ऐसा ही देखने को मिल सकता है। जिस तरह की खबरें दिल्ली तक पहुंच रही हैं, उसमें कहा जा रहा था कि 'दीदी' अचानक बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष के साथ नरम रुख दिखा रही हैं। टीएमसी के अंदर से घोष के साथ पर्दे के पीछे से संवाद शुरू करने की भी कोशिश हो रही है। वजह बस इतनी है कि 'दीदी' की नजरों में जो खटक रहा है, वही घोष की नजरों में भी खटक रहा है। दरअसल कभी मुकुल रॉय टीएमसी में हुआ करते थे और दीदी के बहुत खास लोगों में गिने जाते थे। लेकिन 2017 में जबसे उन्होंने बीजेपी जॉइन की, वह दीदी के दुश्मन नंबर एक बन गए। उधर मुकुल रॉय का बीजेपी में आना दिलीप घोष को पसंद नहीं आया। दिलीप घोष को शुरू से ही यह डर लग रहा था कि मुकुल रॉय उन पर भारी पड़ सकते हैं। हुआ भी वही। बीजेपी की जो नई नैशनल टीम घोषित हुई है, उसमें मुकुल रॉय को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया। यह एक बड़ा संकेत है कि पार्टी की टॉप लीडरशिप को किस हद तक मुकुल रॉय में भरोसा है। मुकुल रॉय के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनते ही राज्य में नेताओं से लेकर कार्यकर्ताओं तक में उन्हें अपना चेहरा दिखाने और उनका विश्वास जीतने की होड़ मच गई है। दिलीप घोष के लिए यह खतरे की घंटी जैसा है, इस वजह इन दिनों उन्होंने खुलकर रॉय के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। दीदी भी यही चाह रही हैं कि बीजेपी के अंदर से ही कोई मुकुल रॉय के लिए चुनौती खड़ी करे। देखा जाए तो घोष उन्हीं का काम कर रहे हैं।

विश्व के प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक गुड्स निर्माता भारत में उस समय भी उपस्थित थे। फॉक्सकॉन और लेनोवो आंध्र प्रदेश के श्रीसिटी और तमिलनाडु के श्रीपेरंबदुर में फोन दूसरे ठेकेदारों से बनवा रहे थे।

बिहार से बेरुखी की वजह

ममता सिंह।

बिहार चुनाव गति पकड़ रहा है। निष्पक्ष तरीके से चुनाव कराने के लिए दूसरे राज्यों के अधिकारियों को बिहार के लिए ऑब्जर्वर बनाने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। लेकिन ब्यूरोक्रेसी में कहा जाता है कि बिहार जाने के नाम से ही ज्यादातर अधिकारियों का गला सूखने लगता है और वे वहां जाने से बचने की तिकड़म भिड़ाने में लग जाते हैं। दरअसल बिहार में शराबबंदी लागू है। घर–परिवार और ऑफिस के तमाम दूसरे सहयोगियों से दूर दूसरे राज्य में और वह भी चुनाव जैसी महती जिम्मेदारी को निभाने में रात को सुकून देने वाली 'चीज' ही जब मुहैया न हो, तो फिर वहां जाने के नाम से गला 'सूखना' स्वाभाविक है। और यह कोई एक–दो दिन की बात भी नहीं है, लंबा चुनाव कार्यक्रम है। ऐसे में कम से कम तीन हफ्ते तो वहां सबको रुकना ही पड़ेगा। जो अधिकारी वहां के पहले के चुनावों में ड्यूटी कर आए हैं, वे नए अधि ाकारियों के लिए 'गाइड' साबित हो रहे हैं कि अगर ड्यूटी न बदली गई, तो क्या और किस तरह का 'जुगाड़' वहां चल सकता है? अगले चुनाव में इस तरह की मुश्किल से बचने के लिए अधिकारियों के बीच यह सलाह चल रही है कि चुनाव आयोग को उन अधिकारियों की लिस्ट

पहले से मुहैया करा दी जाए, जो शाम की 'बैठकी' के शौकीन नहीं हैं और यह निवेदन कर लिया जाए कि 'मानवीय' आधार पर इन्हीं अधिकारियों में से किसी की बिहार में ड्यूटी लगाई जाए। वैसे देखना दिचस्प होगा कि बिहार जाने से बचने के लिए अधि ाकारी इस बार चुनाव आयोग के समक्ष क्या–क्या दिलचस्प वजह बताते हैं।

क्यों लहराई तलवार? यूपी के मुख्यमंत्री रह चुके कल्याण सिंह पिछले दिनों जब अस्पताल से डिस्चार्ज हुए तो उन्होंने तलवार लहराई। राजनीतिक गलियारों में यह माना जा रहा है कि तलवार लहराने का मतलब यह नहीं था कि उन्होंने कोरोना को मात दे दी है, बल्कि वे पार्टी लीडरशिप तक यह संदेश पहुंचाना चाहते हैं कि उन्हें अभी बूढ़ा न माना जाए। अयोध्या में विवादित ढांचे के गिराए जाने के वक्त वे यूपी के सीएम थे और अब जब राम मंदिर का चारों ओर शोर है तो वे नेपथ्य में नहीं जाना चाहते। वैसे यूपी में लंबे वक्त तक बीजेपी के हाशिए पर रहने पर कल्याण सिंह ने दो बार पार्टी भी बदली और अपनी धुर विरोधी विचारधारा की समाजवादी पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन भी किया। बीजेपी में वापसी और 2014 में केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद से वे पार्टी में महती भूमिका के ख्वाहिशमंद चल रहे हैं, लेकिन पार्टी लीडरशिप ने '75 प्लस' की पॉलिसी के तहत मुख्यधारा की राजनीति से हटाकर उन्हें राजस्थान का राज्यपाल बना दिया था। वैसे उनके पुत्र सांसद और पौत्र यूपी सरकार में मंत्री हैं, लेकिन कल्याण सिंह को खुद को रिटायर कहलाना पंसद नहीं है। राजस्थान के राज्यपाल का कार्यकाल पूरा होने के बाद उन्होंने एक बार फिर से सक्रिय राजनीति में आने की इच्छा जताई थी। वे चाहते थे कि मंदिर निर्माण में ही उन्हें कोई सक्रिय भूमिका दे दी जाए। विवादित ढांचे को गिराए जाने को लेकर जब फैसला आने वाला था, तो उसे वे अपनी जीत के रूप में सेलिब्रेट करना चाहते थे, लेकिन ऐसा इसलिए नहीं कर पाए कि उनको कोरोना हो गया था। 88 वर्षीय कल्याण सिंह को पार्टी लीडरशिप बार–बार उम्र का हवाला देकर घर बैठने का इशारा कर रही है। ऐसे में कल्याण सिंह के लिए तलवार लहरा कर जवाब देना जरूरी भी हो गया था।

सूडोकु नवताल- 5509

★★★★☆ मध्यम

		5			3			
	2			9	5			
9						6		
			9				3	5
	6						7	
4	8				1		6	2
		7						3
			2	4			9	
			8			2		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5508 का हल

2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2

अपना ब्लॉग

ठाकोर को नहीं मिल रहा ठौर

मोहन। एक वक्त गुजरात में तीन युवाओं की तिकड़ी काफी मशहूर हुई थी। हार्दिक पटेल, जिग्नेश मेवानी और अल्पेश ठाकोर। हार्दिक पटेल अब गुजरात प्रदेश के कांग्रेस के अध्यक्ष हैं। जिग्नेश विधायक हैं लेकिन अल्पेश ठाकोर बार–बार पाला बदलने की वजह से इन दिनों मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं। गुजरात वि ाानसभा चुनाव के मौके पर वे कांग्रेस के टिकट पर विधायक चुन लिए गए थे, लेकिन पार्टी के अंदर बेहतर एडजस्टमेंट की महत्वाकांक्षाओं के चलते उनका पार्टी से मोह भंग होना शुरू हुआ। पहले वे नेता प्रतिपक्ष बनना चाहते थे, उसके बाद 2019 में अपनी पत्नी के लिए कांग्रेस से लोकसभा के टिकट के ख्वाहिशमंद हो गए। जब वह भी नहीं मिला तो उन्होंने विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा देकर बीजेपी जॉइन कर ली और अपनी पुरानी सीट पर हुए उपचुनाव में बीजेपी के उम्मीदवार बने थे।